

853. = ed. RODR. S. 214. a. गुणाशयं.
855. b. संधम könnte hier auch *Hochachtung* bedeuten. Vgl. Spruch 2267.
865. Vgl. Spruch 2211.
868. d. सर्वस्याभ्यागतो NĪTISAṆK.
875. a. b. गूढनैथुनधार्ष्ट्यं च काले काले च सं० । d. पञ्च NĪTISAṆK. (s. die Corrigg.).
881. = NĪTISAṆK. 73. c. प्रतिदिनं समाकृष्य. d. Umgestellt: शङ्का किं.
886. = I, 98 JOHNS. DĀMPATĪ. 9. d. हि st. च, परिष्कृतं st. पुरस्कृतं, आकृष्ट st. आकृष्टि.
887. Vgl. BULG. P. 7, 12, 9.
889. = 3, 54 lith. Ausg. II. a. चाण्डालो.
897. = II, 161 JOHNS. S. 248 ed. RODR. c. d. गुणाघातिनश्च पिश्रुना भोगे न सु० JOHNS. ;  
निघ्नानि RODR.
900. b. राङ्गणा Druckfehler für राङ्गणा.
911. = ed. RODR. S. 293. a. विचेतसं.
932. = ed. RODR. S. 367. a. जनयते.
936. Lies in der Note: अभिलुतम् und उपदुतम् st. उपलुतम्, und अभिदुतम् st. उपदु-  
तम्. MBH. 13, 276, b (am Ende des Adhj.) hat अतिदुतम्.
938. = KĀM. NĪTIS. 9, 51. Vgl. Spruch 3133.
951. = 1, 61 lith. Ausg. II. a. जल्पन्त्यन्येन (lies: जल्पत्यन्येन) वै सार्धं.
956. = 3, 98 lith. Ausg. II. a. एषः (!) st. एकः. d. प्राणिनो st. जन्तवो. In der Ueber-  
setzung ist am Ende zu lesen: *gleich den Würmern in der Frucht des Feigenbaumes.*
959. Vgl. Spruch 2260
964. = I, 59 JOHNS. a. b. ज्ञातिमात्रेण कश्चित्किं बध्यते पू०.
965. = 2, 39 lith. Ausg. II. a. गच्छतात्.
967. = 1, 47 lith. Ausg. II. c. स्पर्धया (= इच्छया Schol.) st. श्रद्धया.
974. = NĪTISAṆK. 85. a. ब्रह्मानस श्रूयतां.
975. Vgl. Spruch त्रीर्णमन्नं प्रशंसति in den Nachträgen.
976. = 3, 84 lith. Ausg. II. d. विज्ञानं (lies विज्ञातं) स्मरशासनाङ्घ्रियुगलं मुक्ता तु  
नान्या गतिः.
977. b. Das Ende ist verdorben, wie das gestörte Metrum (— — —) zeigt. STENZLER.
990. a. प्र macht nicht nothwendig Position. STENZLER.
1001. = 3, 41 lith. Ausg. II. b. परिचयामः (= संपत्तैः [d. i. संपत्तैः] सह वसामः Schol.).
1005. = 1, 95 lith. Ausg. II. b. विकसित.
1008. a. प्रेषितस्य und मानः NĪTISAṆK. c. d. स्त्रीणां सतीलं च कुतः कुतः प्रीतिः ख-  
लस्य च NĪTISAṆK.